IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 19, April 2026
Impact Factor: 8.2

किशोर विद्यार्थियों के गिरते जीवन मूल्य से होने वाली सामाजिक समस्याओं का अध्ययन

डॉ. ममता त्रिपाठी

सार

प्रस्तुत शोध पत्र का शीर्षक षकिशोर विद्यार्थियों के गिरते जीवन मूल्य से होने वाली सामाजिक समस्याओं का अध्ययनष विद्यार्थियों में निहित मूल्य प्रभाव से संबंधित है स प्रस्तुत शोध का उद्देश्य किशोर बालक एवं बालिकाओं में गिरते जीवन मूल्य से होने वाली सामाजिक समस्याओं के मध्य फलंको का तुलनात्मक अध्ययन करना था शोध अध्ययन हेतु इंदौर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का चयन किया गया स न्यादर्श हेतु इंदौर शहर के 10 विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया प्रदत्तों की संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा निर्मित गिरते जीवन मूल्य से होने वाली सामाजिक समस्याओं से संबंधित प्रश्नावली का निर्माण किया गया स प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी– परीक्षण का उपयोग किया गया शोध अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर बालकों में गिरते जीवन मूल्य से होने वाली सामाजिक समस्याएं किशोर बालिकाओं की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाई गई

प्रस्तावना

भारती विद्वानो एवं चिंतकों में अर्थ को धर्म का साधन बतलाया है लिखा है ष्धानंद धर्मम अर्थात धन से धर्म की सिद्धि होती है इसका अर्थ यह है कि धन के माध्यम से दान दक्षिणा धार्मिक यात्राएं देवालय निर्माण सामाजिक कार्य आदि संपन्न कराए जा सकते हैंस जिसका अंतिम लक्ष्य धर्म की प्राप्ति ही होता है अर्थ समस्त भौतिक सुखों की आवश्यकता और साधनों का द्योतक है कामरू काम शब्द का अर्थ है जीवन का आनंद स जीवन का आनंद या काम शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है (1)शारीरिक आनंद (2) मानसिक आनंद प्रायरू काम शब्द का प्रयोग शारीरिक आनंद हेतु किया जाता है यौन संबंध अर्थात विषम – लिंगी संबंधों से मानव को आनंद प्राप्त होता है उसे शारीरिक आनंद कहते हैं स मानव ह्रदय से प्राप्त आनंद को मानसिक आनंद कहते हैं सामाजिक समृद्धि हेतु काम का अपना विशेष स्थान है शारीरिक आनंद अर्थात इंद्रिय सुख या यौन प्रवृत्तियों की संतुष्टि से समाज या अक्षुण बना रहता हैस

धर्म धर्म शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की **धृ**धातु से हुई है **धृ** का अर्थ है–**धारण** करना सहारा देना

आलंबन देना धर्येत् इति धर्म जो धारण करने योग्य है वही धर्म है जेमिनी के अनुसार जो प्राणी प्रेरणा देता है वही धर्म है स महाभारत में धर्म की व्याख्या के संदर्भ में कहा गया है कि धारणद्वर्म मित्ययाहुरू धर्मो धर्येत् प्रजारू या स्वद्वारण संयुक्तम स धर्म ईति निश्चय' अर्थात जो धारण करने योग्य है वही धर्म कहा जाता है प्रजनन धर्म से ही धारण किए जाते हैंस

मोक्ष मुख शब्द का अर्थ शाब्दिक अर्थ है मुक्ति मुक्ति का अर्थ छुटकारा या बंधनों से मुक्त होना बंधन से तात्पर्य जीवन के आवागमन से मुक्त होना ताकि उसे आत्मा को बार–बार जन्म के बंधन में ना पढ़ना पड़े वर्तमान में अर्थ एवं काम के कारण मानव

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-34433

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 19, April 2026 Impact Factor: 8.2

में जीवन मूल्यों का खास होता जा रहा है जिससे अनेक पारिवारिक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का विकार होता जा रहा है

औचित्य वर्तमान में अर्थ एवं काम के कारण मानव में जीवन मूल्यों का हास् होता जा रहा है जिसके अनेक पारिवारिक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का विकास होता जा रहा है चूकी किशोरावस्था संघर्ष एवं तूफान की अवस्था होती है अतः देश के किशोर भी वातावरण के साथ समायोजन करने में कठिनाई प्रतीत करते हैं आज की इस विज्ञान के युग में भारतीय सामाजिक मूल्य धर्म से प्रभावित न होकर भौतिकता से प्रभावित हैं जिसके कारण जीवन मूल्यों का पतन हो रहा है जीवन मूल्य के गिरने के कारण कौन सी समस्याएं उत्पन्न हो रही है?क्या सामाजिक स्थिति पूर्वागत है या सामाजिक स्थिति प्रभावित हो रही है यह देखने हेतु शोधार्थी द्वारा जीवन मूल्य से संबंधित पूर्व शोधों का अध्ययन किया गया है सिह (2008) ने पाया कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के जीवन मूल्य के अध्ययन के अनुसार धार्मिक, सामाजिक, प्रजातांत्रिक, सौंदर्यात्मक, बौद्धिक, सुख प्रवृत्ति, शक्ति, सत्ता एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों के संदर्भ में छात्र एवं छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं था कुमार एवं आईशाबी (2008) ने छात्रों और छात्राओं की मूल्य के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया कुमार (2018) ने पाया कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्य के क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थक नहीं था कपूर (2020) ने पाया कि बालिकाओं में सामाजिक मूल्य बालकों की अपेक्षा अधिक उन्नत थे होलानी (2020) ने पाया की बालिकाओं में तुलनात्मक रूप से सामाजिक मूल्यों की अधिकता पाई गई स बालिकाओं द्वारा अपने मित्र की भलाई करना लोक सेवा करना तथा समाज हित के कार्यों को करना आदि बातों को अधिक महत्व दिया जाता है बालिकाओं की अपेक्षा बालक द्वारा जीवन मूल्यों को अधिक महत्व दिया था जोसेफ (2021) ने शोध अध्ययन में पाया कि वर्तमान समय में मिशनरी विद्यालयों में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के मानस में जीवन मूल्यों का पतन नहीं था स

इस प्रकार पूर्व शोध अध्ययनों के परिणाम में अभिनेता पाई गई एवं यह भी देखा गया कि गिरते जीवन मूल्यों के साथ सामाजिक समस्याओं से संबंधित शोध अध्ययन नहीं किया गया है अतः शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन हेतु किशोर विद्यार्थियों के गिरते जीवन मूल्यों से होने वाली सामाजिक समस्याओं का अध्ययन शीर्षक का चयन किया गया स

समस्या कथन प्रस्तुत शोध का शीर्षक निम्न है–

किशोर विद्यार्थियों के गिरते जीवन मूल्यों से होने वाली सामाजिक समस्याओं का अध्ययन

उद्देश्य प्रस्तुत शोध का उद्देश्य था–

किशोर बालक एवं बालिकाओं के गिरते जीवन मूल्य से होने वाली सामाजिक समस्याओं के मध्य फलंको का अध्ययन

परिकल्पना प्रस्तुत शोध की परिकल्पना थी –

किशोर बालक एवं बालिकाओं के गिरते जीवन मूल्यों से होने वाली सामाजिक समस्याओं के माध्म फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है

न्यादर्श प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु इंदौर शहर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन याद्वचिछक विधि से किया गया तत्पश्चात शोधकर्ता द्वारा मध्य प्रदेश की इंदौर जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र से दस विद्यालयों को सूचीबद्ध किया उपकरण का

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 19, April 2026 Impact Factor: 8.2

मानकीकरण करने हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 300 बालक एवं बालिकाओं का चयन किया गया तत्पश्चात उद्देश्य से संबंधित प्रदत्तो का संकलन करने के लिए 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 600 बालक एवं बालिकाओं का चयन किया गया शोध अभिकल्प प्रसिद्ध शोध अध्ययन सर्वेक्षणत्मक सर्वेक्षण विधि का था

तालिका 1.1 से विदित होता है कि टी का आकालित मांन स्वतंत्रता की कोटि 598 पर 2.160 है जो की 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है यह दर्शाता है कि किशोर बालक एवं बालिकाओं के गिरते जीवन मूल्य पर होने वाली सामाजिक समस्याओं में सार्थक अंतर है इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना की उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर बालक एवं बालिकाओं के गिरते जीवन मूल्यों से होने वाली सामाजिक समस्याओं के मध्य फलंको में सार्थक अंतर नहीं है निरस्त की जाती है आगे तालिका 1.1 यह भी स्पष्ट होता है कि किशोर बालिकाओं बालकों के गिरते जीवन मूल्य से होने वाले सामाजिक समस्याओं के मध्य फलांकों 77.25 है जो कि किशोर बालिकाओं के गिरते जीवन मूल्य से होने वाली सामाजिक समस्याओं के मध्य फलांक 7 5.28 से उच्च है अतः यह है कहां जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर बालक और बालिकाओं के गिरते जीवन मूल्य से होने वाली सामाजिक समस्याओं के मध्य फलांक को में सार्थक अंतर पाया गया

निष्कर्ष रू यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर बालकों में गिरते जीवन मूल्यों से होने वाली सामाजिक समस्याएं किशोर बालिकाओं की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाई गई

संदर्भ सूची

01– कपूर. मा. (2020) पारिवारिक परिवेश का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव जर्नल ऑफ हयुमेन बेइयुज 2(7). 124–139

02– जैन रो (2022) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम महाविद्यालय में विविध जीवन मूल्यों का सांपेक्षिक महत्व भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका13–18

03– भारत टॉक (2008) मूल्य शिक्षा में विद्यालय की भूमिका जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन3(2). 81.

04– सिंह कुमार अ. (2008) माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के जीवन मूल्यों की तुलना इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवियर 2(5).56–67

05– होलानी आनंद (2020) नैतिक शिक्षा तथा ज्ञानात्मक विकास जनरल ऑफ वैल्यू एजुकेशन5(1) 31–36